दृष्टि The Vision

दुनिया ① ⑦ सबसे कीमती

drishti

Drishti Mentorship Program Mains-2023

निबंध (ESSAY)

निर्धारित समय: 3 घंटे
Time allowed: 3 Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

Name: Karmveer Narwadia
Mobile Number:

Medium (English/Hindi): Hindi
Email:

Center & Date: MKN| 1 July 2023
UPSC Roll No.: 0852672

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख उत्तर पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णत: काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Answer Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A		
खंड-B Section-B		
सकल योग (Grand Total)		

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

drishti | दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

खण्ड-A

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1 दुनिया उन लोगों द्वारा नष्ट नहीं होगी जो बुराई करते हैं, बल्कि उन लोगों द्वारा नष्ट होगी जो बिना कुछ किए उन्हें देखते रहते हैं।

समर शेष है नहीं, पाप का भागी केवल व्याध जो तटस्थ है, समय उनका भी लिखेगा अपराध।

प्रगतिवादी कवि रामधारी सिंह दिनकर के ये पंक्तियाँ शीर्षक को उद्धृत करती है कि अगर बुराई का सामना न करके, उससे तटस्थ रहें, तो एक न एक दिन समय या इतिहास भी उनके अपराधों को क्षमा नहीं करेगा। बुराई का खात्मा बुराई करने वालों को सामने से जवाब देने पर ही होता है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

मध्यकालीन भारत में जब सामाजिक- धार्मिक कुरीतियों का प्रचलन था. तब अनेक कवि, साहित्यकार इत्यादि ने इन बुराईयों को तर्क बुद्धि से उत्तर दिया। ये दिखाते है कि बुराई का खात्मा सामने करने से होगा। जैसे- कबीर जी कहते हैं।

जो तू बामन- बमणी का जाया।
आन- बान त क्यूँ नही आया ।।

काकर पाथर जोड़ि के, मस्जिद लई बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुय खुदाय।।

पाहन पुजे हरि मिले, तो मैं पूँजू पहार।
ताते तो चाकि भली, पिस खाए संसार।।

साथ ही समाज में आधुनिक काल में भी सती प्रथा, बाल विवाह, बेमेल विवाह, आर्थिक असमानता, बलात श्रम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इत्यादि बुराईयो के साथ समाज चल रहा था। तब भारतीय धार्मिक सुधार आंदोलक राजाराम मोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, दयानंद सरस्वती, बहरामजी मालाबार इत्यादि ने इन कुरीतियों का पुरजोर विरोध किया। यहाँ तक इन्होंने खुद को समावेशित किया। डी. के कर्वे का विधवा विवाह इसका उदाहरण हैं। इसी का परिणाम था कि विलियम बेंटिक सती प्रथा निरोधक कानून, चाल्ड्स ऐज कसेण्ट एक्ट इत्यादि से जनता का साक्षात्कार हुआ। ये यही दिखाते है कि बुराईयों का खात्मा प्रयास करने से ही होते है, ऐसे तो समय यों ही किसी का इन्तजार नहीं करता है और चलता रहता है।

इसी तरह भारतीय मिथक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

साहित्य में (रामायण, महाभारत) मे काफी बार देखा गया। जहाँ रामायण में रावण रूपी राक्षस ने पृथ्वी पर हा-हा कार मचा रखा था। उस का सामना कोई नही करना चाहता था। तब नारायण अवतार प्रभु श्रीराम धरती पर जन्म लेते हैं, उस के बाद जो हुआ, वह तो सब जानते ही हैं कि कैसे बुराई रूपी रावण ने सीताहरण किया, और प्रभु श्रीराम तथा उनकी सेना ने न केवल उनका वध किया बल्कि वहाँ सुशासन की स्थापना किया। बुराई का प्रतिरोध ही अच्छाई की शुरुआत है।

इसी तरह महाभारत में दुर्योधन रूपी बुराई ने जब षडयंत्रों के चलते पाण्डवों को वनवास, तत्पश्चात् सुई के नोंक के बराबर जमीन न दे सका देना, उसी बुराई एक महाभारत युद्ध करवाती है, यहाँ

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

विचारणीय यह है धृतराष्ट्र जिस प्रकार चुप्पी साधे हुए थें, वह दिखाता है कि बुराई को प्रतिरोध देना होगा, नहीं तो फिर सर्वनाश हो जाता है। वहीं हुआ दुर्योधन सहित 100 पुत्रों की मौत।

यही सन्दर्भ आज के पर्यावरणीय न्याय के बारे में विचारे तो गाँधीजी कहते हैं-

"यह धरती सभी के संसाधनों की पूर्ति कर सकती है लेकिन किसी के लालच का नहीं"

आज पर्यावरण में अल्पविकसित देश, विकासशील देश और औद्योगिक रूप से पिछड़े देश अपने विकास की प्रक्रिया में अनेक प्रकार से पर्यावरण को दूषित कर रहें हैं। यह उपचारीकरण के लिए संसाधनों की जरूरत होती है लेकिन संसाधन कौन देगा? कौन इसकी जिम्मेदारी लेगा? इसका एक उत्तर है- विकसित देश।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

अगर विकसित देश विकास की प्रक्रिया में इतना आगें होकर भी इस समस्या को तटस्थता के साथ देखतें रहें तो दुनिया का अन्त निश्चित है। प्रयास उन्हें करना ही होगा जिनके पास सामर्थ्य है। बुराईयों का सामना करके दुनिया को बचाया जा सकता है।

इसी तरह भारतीय दर्शनिशास्त्र में भी चार्वाक के अलावा सभी कर्म के लिए प्रेरणा देते है। जैनों का कर्मवाद इसका काफी अच्छा उदाहरण है। जहाँ मोक्ष की प्राप्ति के लिए एक निश्चित दिशा में बुराईयों के खिलाफ कार्य करने होगें।

इसी तरह नव्यवेदांत दर्शन मे मानवतावाद पर ध्यान दिया जाता है, जहाँ स्वामी विवेकानेद के अनुसार " कार्य मानव की भलाई के लिए करने आगे, अगर आप

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

गरीब, पीड़ित इत्यादि की मदद करते हों, तो उससें बड़ा कोई पुण्य नहीं है। यह विचार आज समाज में फैली असमानता का सामना कर सकता है।

ऑक्सफैम की रिपोर्टानुसार भारत के टॉप 10% के पास लगभग 50% सम्पति है, वह नीचे के 10% केवल 1% से गुजारा करतें है। यह असमानता अनेंक विभेदीकृत अपराधों को जन्म देती है। जिसकें समाधान किया जाना आवश्यक है।

इसी तरह हिन्दू धर्म की पवित्र ग्रंथ गीता में भी 'निष्काम कर्म' मार्ग के लिए कहा जाता है। कहा गया है कि

" जो मनुष्य सुख-दुख, सर्दी-गर्मी, लाभ-हानि, जीत-हार, जीवन-मरण की चिन्ता न करते हुए अपने कर्तव्यमार्ग में लीन रहते हैं, वही सच्चा निष्काम कर्मयोगी है

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

परमात्मा स्वयं सभी कर्मों का अधिष्ठाता होते हुए भी मनुष्य को विवेकयुक्त बनाता है । अतः वह अपने विवेक युक्त मन से किए गए बुरे कार्यों का जिम्मेदार भी वह स्वयं होगा और अच्छे कर्मों का भोगी भी स्वयं।"

गीता में ये भी लिखा है कि अनासक्ति मार्ग का कहकर यह कार्य की जिम्मेदारी परम परमात्मा पर नहीं डाल सकते अर्थात् जो बुराई करते हैं, उन लोगों की चुप्पी सहना ही गलत है. दिनकर कहते हैं

रुग्ण होना चाहता कोई नहीं
रोग लेकिन जब आ गया पास हो
तिक्त औषधि के अलावा उपचार क्या?

अर्थात् बुराई का सामना करना ही बुराई के प्रति जीत है, दिनकर अपनी कविता कुरुक्षेत्र में कहते हैं -

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

पुण्य है विच्छिन्न कर देना
बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ हैं।

इसके अलावा कांट भी कर्मवाद के समर्थक रहे हैं वे भी कहते हैं. आपकी अन्तरात्मा से आवाज आती है कि

"कर्म के लिए कर्म रहो।"

कर्म को कर्म के लिए करना चाहिए लेकिन फर्क पड़ता कि इससे आगे क्या होगा? एक समय क्या जिम्मेदारी है- वह है बुराईयों का निषेध करना। इसके बिना दुनिया को नहीं बचाया जा सकता।

वस्तुतः जो शीर्षक था, वह आज के लिए प्रासंगिक है, यह विचारणीय प्रश्न है आज भारत के सामने आन्तरिक उग्रवाद, असमानता, चीन, पाकिस्तान की भारत विरोधी नीतियाँ, बढ़ती बेरोजगारी, गरीबी, IPR मुद्दे, विनिर्माण क्षेत्र के मुद्दें हैं।

साथ ही वैश्विक समस्या में बढ़ता

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

राजकोषीय घाटा, व्यापार घाटा, खालिस्तानी आंदोलन, श्रमिक मुद्दे, WTO/UN प्रासंगिकता इत्यादि मुद्दें हैं।

इनका समाधान <u>हाथ पर हाथ रखें</u> तो नही होगा। कहा जाता है-

"कर्म न करने वालों को उतना ही मिलता है जितना कर्मशील लोग छोड़कर जातें हैं।

तो इसके लिए भारत सरकार जैसे आर्थिक क्षेत्र के लिए आत्मनिर्भर भारत योजना, निर्यात प्रोत्साहन योजना, अवसंरचना विकास इत्यादि कर रही है। साथ ही गरीबी, बेरोजगारी के लिए PDS, रोजगार सृजन कार्यक्रम इत्यादि केन्द्रीय स्तर पर चलाए जा रहें हैं जो भारत की स्थिति को मजबूत करतें हैं। इन बुराईयो का सामना बैठे-बिठाए ना हो कर प्रगतिशील होकर कर्मशील होनें पर ही होता है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

साथ ही UN रिफॉर्म्स, W.B, IMF इत्यादि के प्रयास भी देशों द्वारा किए जा रहें हैं।

आज के युगीन समाज में राजनैतिक जिम्मेदारियों पर विद्रुपता का एक ऐसा दोहा ऐसा खींचा कि पुरा सिंहासन हिल गया। नागार्जुन लिखते है-

इन्दु जी, ओ इन्दु जी
क्या हुआ आपको।
बेटे को तार दिया
बोर दिया बाप को॥

यह समस्याओं को ना झेलकर उनका लड़कर सामना करना ही है।

<u>अतः</u> दुनिया बहुत खुबसूरत है लेकिन दुनिया ने पुरातनकाल से अनेक आपदाओं का सामना करतें हुए अपना एक स्थायी कर्मशीलता को बनाए रखा है, जिससें वृद्धि के अवसर मिलतें रहें हैं।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

दुनिया मे कर्मवाद की प्रेरणा को नैतिक आधार पर स्थापित करते हुए खुद को कर्तव्यों और स्वधर्म के लिए प्रेरित कर देना आज के मानव का मुख्य लक्ष्य है। आज जरूरत है कि समस्याएँ चाहे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कैसी भी हो। कर्मशीलता को अपनाकर पृथ्वी इसका सामना कर सकती है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खण्ड-B

सबसे बड़ी बाधा आपके पास की दुनिया में नहीं बल्कि अपने मन की गहराईयों में है

नौं लख पातरि आगें नाचे, पीछे सहज अखाड़ा
ऐसो मन लौं जोगि खेलै, तब अंतरि बसै भण्डारा।

आदिकालीन नाथ साहित्य मे उपयुर्क्त रचना का अर्थ है कि योग वही है जो मन की अनन्त विचारधाराएँ उसे भटकाने का प्रयास कर रही है लेकिन वह एक परमात्मा की साधना में लीन है। ऐसा मानसिक स्तर पर नियंत्रण है तभी योगी को मानसिक स्तर पर कल्याण की अनुभूति होती है अर्थात् परमात्मा का वास होता है। अतः मन की बाधाओं को पार कर लेने पर मनुष्य की विजय निश्चित हो जाती है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

जिस प्रकार इतिहास में गाँधीजी के स्वतंत्रता आंदोलन के योगदानों के सन्दर्भ में मानसिक विजय को ले सकते हैं। असहयोग आंदोलन के बाद देश में विद्रोह चरम पर था तब चौरी-चोरा होता है तब उन्होनें असहयोग वापस ले लिया। यह वापिस लेना उन्हें सेनातियों को पच नही रहा था, लेकिन गाँधीजी मानसिक तौर पर एक ठोस व्यक्ति थे। वे जीवन या कोई भी परिस्थिति में अपने सिद्धान्तों अहिंसा, साधन-साध्य की पवित्रता का ध्यान में रखते हुए हर एक परिस्थिति का दृढ़-निश्चयी होकर सामना करते हैं। इसके बाद चाहे वह उग्रवादी विचारधारा हो या अंग्रेजी सरकार के दमन इत्यादि में वे आन्तरिक मन से मजबूती उन्हें अपने लक्ष्य के प्रति एक विजेता बना देती है और यही कारण था भारत के आजाद होने का।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

तो क्या बाधा नहीं आती, कोई भी मनुष्य लीक से हटकर चलता है। समाज, परिवार, रिश्तेदार सभी पीछे पड़ जाते हैं, जैसे- सिविल सेवक बनने की चाहत में भारत में लाखो युवा तैयारी करते है, उनके भी बाहरी बाधाएँ बहुत है जैसे- आर्थिक निर्भरता, सरकारी का भ्रष्टाचार के कारण भर्ती का अटकना। लेकिन इन सभी का समाधान है- नीतिशास जो मन की गहराईयों को मजबूत करता है कि हर एक असफलता के बाद मन बोलता है- अगले प्रयास मे सफल हो जाऊँगा।

ऐसा ही कठोर चरित्र जो मानसिक रूप से विजयी हो, विजय पाता है। इसीलिए कामायनी में प्रसाद कहते है-

"शक्ति के विद्युत्कण, जो विकल हो बिखराय।
समन्वय उनका करें समस्त, मानवता विजयी हो जाय।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इसी को एक अन्य उदाहरण से समझते हैं, हरियाणा ~~में~~ जो लिंगानुपात में पिछड़ा हुआ राज्य माना जाता है, वहाँ की पर्वतारोही "अनिता कुण्डु" ने देश-विदेश की अनेक चोटियों जिनमें माउण्ट एवरेस्ट पर 2 बार, किली मंजारों पर फतेह हासिल की है। वे कहती हैं।

"मानवीय चरित्र में मानसिक क्षमता के गुण से आप भविष्य में वहाँ पहुँच सकते हो, जहाँ तक आगामी तीन पीढ़ियाँ भी नहीं पहुँच सकती है।"

भारतीय दर्शनशास्त्र मे भी जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी भी पश्चिमी दर्शनशास्त्र फ्रॉयड के मनोविश्लेषणवाद से प्रभावित हैं जो कहता है कि मानव मन की योग्यता चेतन मन सें नहीं ~~हो~~ नाप सकते हैं, यह तो अवचेतना मन मे "कामचेतना" से देखी जाती है अर्थात्

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मन की आन्तरिक गहराईयो से आप क्षमता का निर्धारण कर सकते है।

इसी के साथ "अन्तरात्मा" की आवाज भी कहीं न कहीं मन की आवाज ही कही जाती है और कहते हैं- ये अंतरात्मा ही की आवाज है कि मनुष्य को विशेष परिस्थितियों में क्या व्यवहार करना चाहिए। अगर मानसिक स्तर को इतना मजबूत कर लिया जाए तो मनुष्य हर परिस्थिति में समस्याओं का निराकरण करने में सफल होगा।

अगर हर मनुष्य मन की गहराईयों को नैतिक मजबूती से खुद को बाँध ले तो मानवीय दृष्टिकोण आज सफल संभावनीय संभाव्य भविष्य की ओर अग्रसर हो जाएगा। स्वामी विवेकानंद का मानवतावादी दृष्टिकोण इसी का एक उदाहरण है

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

जहाँ वे सभी मनुष्यों को अपनी इंद्रिय लिप्सा पर नियंत्रण रखते हुए खुद को मानव की सेवा में ~~लगाते हुए~~ समर्पित करने की माँग करते हैं जिससे क्रमशः समस्त शू-धरा का कल्याण होगा।

जब एक चींटी अपने खुद के ऊपर खुद के वजन से ज्यादा लेकर दाना चलती है तो क्या लगता है, उसका विश्वास नहीं डोला होगा, उसने भी हजारों बाधाओं को पार किया होगा, उसकी मानसिकता मजबूती का ही परिणाम है कि

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चढ़ती है
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है
मन का साहस रंगों में हिम्मत भरता है
चढ़ कर गिरना, गिर कर चढ़ना न अखरता है
मेहनत उसकी बेकार हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

लेकिन वहीं अगर मानसिक गहराईयों

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

से ज्यादा बाहरी लोग मजबूत हो जाते हैं तो जीवन जीने योग्य नहीं रहता है, मानसिक क्षति मनुष्य को मौत की ओर ले जाती है।

यही कारण है कि कोटा में आज सुसाइड सिटी के रूप में जाना जाने लगा, वहाँ बारहवीं पास बच्चा डॉक्टर, बनने इंजीनियर जिसके पास चाहें ना तो आर्थिक सामर्थ्य, ना ही मानसिक। वे अगर मानसिक मजबूती से परीक्षा में शामिल नहीं होते हैं तो गुमनामी के अँधेरे में कहीं ना कहीं गायब हो जाते हैं।

कहावत बोली जाती है

"मन के करे जीत ~~और~~ तो जीत
मन के करे हार तो हार
ठान ले मेरे यार"।

हम इतना तो कह सकते हैं मन की अभिवृत्तियाँ सफलता में बहुत योगदान देती हैं।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यूरोप में पहले ~~का~~ हीगेल जैसे बुद्धिवादी बुद्धि पर पूर्णतः बल दे रहे थे तब वहाँ थर्स्टन, डेनियल गोलमैन इत्यादि ने मानसिक अभिवृत्तियों के बारे मे बताया कि कैसे अभिरुचि के साथ-साथ अभिवृत्ति मनुष्य को सफलता में कितना साथ देती है।

ऐसा ही प्रयास भारत में भी वेदांत दर्शन के माध्यम से दिखता है कि कैसें मजबूत मानसिक स्तर पर एक कछुआ खरगोश को रेस में हरा देता है। जब कछुआ चलता है तो वह निरन्तर एक गति से सामने की ओर चलता रहता है। और ये निरन्तर प्रयास ही मानसिक मजबूती के परिचायक है जो बाहरी बाधाओं जैसे- खरगोश का चलना। से कछुओ को दूर रखते है और अंततः कछुआ की जीत होती है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मानसिक मजबूती स्पष्टतः दो संकेत तो दे देती है कि क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए, क्या मेरा सामर्थ्य है, क्या मैं नहीं कर सकता हूँ। जब इन प्रश्नो को जवाब मिल जाते है तो ये मन की गहराईयो के मजबूत संबंध को दिखाते है।

जिस प्रकार क्रिकेट मे विराट कोहली ने अपनी क्रिकेट खेलने के लिए स्कूल ड्रॉपआउट ले लिया। यह मध्यवर्गीय परिवार के लिए बहुत बड़ा निर्णय था। लेकिन हम मानसिक मजबूती इसे ही तो कहते है कि कैसे एक मनुष्य को आर्थिक स्तर ध्यान न रखते हुए एक पथ में जहाँ बहुत प्रतिस्पर्धा है, उसमें अपना परचम लहराना मानसिक मजबूती का परिचायक है। ये फैसले ना लिए होते तो विराट कोहली को आज कोई नही जानता।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

ऐसी मानसिक गहराईयों का विश्लेषण अल्बर्ट बांडूरा के कथ्यों में कहे तो जन्म से ही शुरू हो जाता है। इसी के क्रम में शुक्ल जी कहते है।

"मनुष्य के कर्म उसकी चित्तवृत्तियो का प्रतिबिम्ब होते है, वह अपने चित्त को एक-दूसरे से लड़ाते हुए क्रमश: विकसित करता है।"

उसी प्रकार मनुष्य बड़ा होतें-होतें मानसिक विकास होता है। उस क्रम में कई तो गौतम की तरह अध्यात्मिक कल्याण के लिए घर छोड़ देते है तो कई सुकरात की तरह जहर पी जाते है। सब कुछ मानसिक विलक्षणाओं पर निर्भर करता है।

जैसे एक छोटे हाथी को रस्सी से बाँधा जाता है तो वह तोड़ने का प्रयास करता है। उस के बाद जब वह बड़ा होता है तो सामान्य कौशल के साथ उसे तोड़ सकता है लेकिन मानसिक स्तरों पर वह मजबूत नही हो पाता है। उसे तोड़ने की

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कोशिश भी वह नहीं करता।

अत: समय के साथ अगर समस्त जाति एक साथ संयुक्त होकर अपनी अंतरात्मा को नैतिकता से युक्त करे तो वह बाहरी बाधाओं को तो पार करेगी ही करेगी। साथ में वैश्विक शांति, समरसता को प्राप्त करेगी। जिस प्रकार कामायनी में कहते है-

समरस थे जड़ या चेतन
सुंदर साकार बना था।
चेतना एक विलसती
आनंद अखण्ड घना था।

ये मानसिक गहराईयों का ही प्रभाव है कि मनुष्य आत्मप्रेरित होकर सभी समस्याओं का सामना करने के लिए खड़ा होता है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।

(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।

(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।

(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।

(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।

(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation